# 02. दादी जी के महावाक्य

ज्ञान का अर्थ ही है पुराने संस्कारों को बदलना। हम संस्कारों को ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं जहाँ परखने की बात है वह तो सहज है। यूँ तो अपने संस्करों को जान सकते हैं परन्तु फिर भी समझो नहीं पता पड़ता तो जैसे किसके गुण वर्णन करते हैं कि फलाने में यह–यह गुण हैं तो देखना है कि मेरे में वे गुण हैं? इसको कह जाता है अपने को परखना। अगर मैंने अपने संस्कार को जान लिया तो फिर उसको ज्ञान से परिवर्तन करना है। परिवर्तन किया तो उसको कहा जायेगा रियलाइज़ किया। अगर परिवर्तन नहीं किया तो कहेंगे पूर्ण रूप से रियलाइज़ नहीं हुआ है। जिस संस्कार को मैंने रियलाइज़ किया कि यह ठीक है, वह देखना है सबको ठीक लगता है? यदि औरों को वह ठीक नहीं लगता तो उसे ठीक नहीं कहेंगे। हम देखते हैं यह मेरा संस्कार औरों को रुकावट डालता है तो समझना चाहिए इसको बदलना ज़रूरी है। अब उसको बदलने के लिए ज्ञान की शक्ति चाहिए। एक है अपने से रियलाइज़ करना, दूसरा है कि दूसरे हमको रिजल्ट में राइट समझना। अगर दूसरे रिजल्ट में राइट नहीं समझते हैं तो मैं उसको चेंज करूँ। इसको कहा जाता है रियलाइज़ करना।

हम कौन हैं? हम हैं ब्राह्मण। हम न इन्सान हैं, न देवता हैं। इन्सान में सहन करने की शक्ति नही है। निंदा–स्तुति, मान–अपमान सहन कर सकेंगे? नहीं। क्योंकि इन्सान अर्थात् देह–अभिमान वाले और देवताओं के लिए यह बात है ही नहीं। बात है अब हम ब्राह्मणों की। जैसे देखो, हम कइयों को कहते हैं कि ज्ञान के बिना कोई यह नहीं सोचता कि काम विकार को वृत्ति से ही जीतना है। हम कहते हैं वृत्ति में भी यह संकल्प न उठे क्योंकि देवताओं में यह वृत्ति नहीं है। हम मनुष्य से देवता बनते हैं तो हमारा यह संस्कार पूर्ण रूप से परिवर्तन हुआ ना! बाबा ने युक्ति दी कि ज्ञान सहित भाई–भाई की दृष्टि से देखो तो वृत्ति बदल जायेगी। तो इन्सान संस्कार को पलटाकर देवताई संस्कार बनायें ना।

अब बाबा हम बच्चों को बहुत सूक्ष्म ले जाता है। बाबा कहते, बच्चे, किसी भी प्रकार की आप में अटैचमेंट नहीं चाहिए। ब्रह्मा में भी न हो। तो जैसे बाबा एकदम देह की अटैचमेंट से हम बच्चों को परे ले जाते हैं। देहधारी का सहारा भी नहीं। हम कहते कारोबार में तो एक–दो का सहारा तो चाहिए ना, परन्तु नहीं। बाबा कहते, बच्चे, इनसे भी परे। क्योंकि बाबा जानते हैं आत्मा देह में है तो उनका यह संस्कार है। तो बाबा हमें उनसे भी ऊँचा ले जाते कि बच्चे सहरा एक शिव बाबा का। तो देखो बाबा हमारा यह संस्कार भी बदल देते हैं ना कि किसी भी प्रकार से कोई देहधारी की याद न आये। एक शिव बाबा के सिवाय किसी की भी याद न रहे।

अभी हमें यह नहीं समझना चाहिए कि मैं पुरुषार्थी हूँ। मैं तो मा0 सम्पूर्णता के सागर हूँ। मैं तो अब समय के समीप पहुँची हूँ/पहुँचा हूँ। फ़रिश्ता स्वरूप मेरे सामने खड़ा है। बाबा हमें उस सीट पर देखना चाहता है।

अच्छा ओम् शांति।